Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ वट पूर्णिमा व्रत कथा ॥

॥ वट पूर्णिमा शुभ हो ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ सावित्री और सत्यवान का चयन ॥

वट पूर्णिमा में सुनाई जाने वाली सावित्री-सत्यवान कथा का सरल हिंदी रूपांतरण। मूल कथा महाभारत के वनपर्व में आती है; लोकवाचन में विवरण बदल सकते हैं।

राजा अश्वपति की पुत्री सावित्री गुणवान और दृढ़ विचारों वाली थीं। जीवनसाथी चुनने निकलीं तो वन में रहने वाले सत्यवान उन्हें प्रिय लगे। सत्यवान के पिता द्युमत्सेन राज्य और दृष्टि खो चुके थे। सावित्री ने परिवार की परिस्थिति समझकर भी सत्यवान को चुना।

देवर्षि नारद ने बताया कि सत्यवान के जीवन का समय बहुत कम बचा है। पिता अश्वपति चिंतित हुए, पर सावित्री अपने निर्णय पर स्थिर रहीं। विवाह के बाद वे सत्यवान के साथ वन में रहने लगीं। वहाँ सास-ससुर की सेवा और घर का कार्य प्रेम से करती थीं।

समय निकट आया तो सावित्री ने व्रत और प्रार्थना की। निश्चित दिन वे सत्यवान के साथ लकड़ियाँ लाने वन गईं। काम करते हुए सत्यवान को सिर में तीव्र पीड़ा हुई। वे सावित्री की गोद में विश्राम करने लगे और निश्चेष्ट हो गए। तभी कथा के अनुसार यमराज उनके प्राण लेकर आगे बढ़े।

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ सावित्री का धर्मयुक्त संवाद ॥

सावित्री यमराज के पीछे चलीं। यमराज ने लौटने को कहा, पर वे सत्य, धर्म, सदाचार और करुणा के विषय में विनम्रतापूर्वक बोलती रहीं। प्रसन्न होकर यमराज ने सत्यवान के जीवन के अतिरिक्त कोई और वर माँगने को कहा।

सावित्री ने पहले अपने ससुर द्युमत्सेन की दृष्टि लौटने और फिर उनका राज्य वापस मिलने का वर माँगा। आगे उन्होंने अपने पिता अश्वपति के लिए संतानों का वर माँगा। यमराज ने ये वर प्रदान किए, किंतु सावित्री उनके साथ आगे बढ़ती रहीं।

अंत में सावित्री ने अपने और सत्यवान की संतानों का वर माँगा। यमराज ने वह भी स्वीकार किया। सावित्री ने समझाया कि सत्यवान के जीवित रहने पर ही यह वर पूरा होगा। उनके विवेक और वचनों से प्रसन्न होकर यमराज ने सत्यवान को जीवन लौटा दिया।

कथा का समापन

सावित्री लौटीं तो सत्यवान जाग उठे। द्युमत्सेन की दृष्टि और राज्य भी वापस मिला। परिवार ने इसे सुखद आश्चर्य और आशीर्वाद माना। वट पूर्णिमा की कथा सावित्री के साहस, धैर्य और पूरे परिवार के प्रति संवेदना की स्मृति है।

॥ देवी सावित्री को प्रणाम ॥